International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-06-2022, Accepted: 27-06-2022, Published: 14-07-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 29-30

हिंदी वाङ्मय का उज्ज्वल नक्षत्र–सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

अर्चना शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–आलेख का ध्येय महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बहुआयामी पक्षों को उकेरना रहा है । शोध आलेख में निराला के व्यक्तिगत जीवन के पहलुओं सहित साहित्यिक रचनाधर्मिता को सोदाहरण प्रस्तुत किया गया है । निराला के काव्य की प्रगतिशील चेतना सहित उनके काव्य–कर्म के प्रगतिशील विकास के प्रत्येक चरण को क्रमवार प्रस्तुत करना शोध.आलेख का प्रधान उद्देश्य रहा है ।

मूल शब्दः साहित्य, सूर्यकांत, महाप्राण, जनक, मुक्त छंद, महाकवि

प्रस्तावना
हिंदी साहित्य के पुरोधा रचनाकार महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व थे। इनका जीवन–स्रोत 'बैसवाड़े' की जीवटता एवं 'महिषादल' की सरसता के परस्पर धूप–छाँही समन्वय से निःसृत हो रहा था, जिससे उनकी जीवन–सरिता क्रमशः विस्तारित हुई और साहित्य प्रेमियों के आकर्षण का मुख्य केंद्र रही है।
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के जन्म के संदर्भ में रामविलास शर्मा के विचारानुसार –

> "माघ शुक्ल 11, संवत् 1955, तदनुसार 21 फरवरी 1899 को रामसहाय तिवारी के घर पुत्र का जन्म हुआ। उस दिन मंगल था।"

अतः इनका जन्म वर्ष 1893 ई० विदित है।

निराला के व्यक्तित्व के संदर्भ में रामविलास शर्मा लिखते हैं – "सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी स्वस्थ और सुंदर व्यक्ति थे। उनके ललाट, नेत्र, नासिका, अधर, केश, वक्ष, भुजाओं और हाथों की उंगलियों की प्रशंसा में लेखकों ने श्रेष्ठतम विशेषताओं का प्रयोग किया है। किसी ने पठान, किसी ने ग्रीक देवता कहा है। देखने में वे प्रागैतिहासिक काल के आर्य जैसे लगते थे और वृद्धावस्था में तो अपनी दाढ़ी के कारण ऋषि जैसे प्रतीत होते थे।"
यदि गंभीरता से विचार–चिंतन करें तो निराला के काव्य को प्रमुखतः तीन चरणों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम चरण (1920–1936), द्वितीय चरण (1936–1950), तृतीय चरण (1950–1961) ई० तक । इनमें द्वितीय चरण की कविताओं में निराला की चेतना पर प्रगतिशीलता का आशय स्पष्टतः देखा जा सकता है। इन कविताओं का मुख्य स्वर 'यथार्थवाद' के साथ अजस्र रूप से प्रवाहित होता नजर आता है।
आधुनिक हिंदी साहित्य में मुक्त छंद के जनक के बतौर निराला का नाम सम्मान के साथ पुकारा जाता है। कहा जा सकता है कि मुक्त छंद की धारणा निराला से संबंधित है जिसमें वह स्थापित करते हैं कि छंदानुसार भावों के स्थान पर भावानुसार छंदों का प्रयोग होना चाहिए। मुक्त छंद में भावावेग के अनुकूल लय तो होती है परंतु उसमें तुक नहीं होता और उसके सभी चरण सम नहीं होते। अतः निराला के मुक्त छंद में बंधन तो है पर वह बाहरी न होकर आंतरिक है। निराला ने स्वीकारा था कि –'मुक्त छंद तो वह है जो छंद की भूमि में भी रहकर मुक्त है .... मुक्त छंद का समर्थक उसका प्रवाह ही है। वही उसे छंद सिद्ध करता है।'
निराला कृत 'उसकी स्मृति', 'नयन', 'पहचाना', 'कविता' आदि कविताओं में प्रेम की अभिव्यंजना का सजीव चित्रण है, जबकि 'विधवा', 'भिक्षुक' में कवि का 'मानवतावाद' प्रत्यक्ष हो उठा है।
'संध्या सुंदरी' कविता में प्रकृति का मानवीकरण बहुत सुंदर व जीवंत हो उठा है –

"दिवसावसान का समय,
मेघमय आसमान से उतर रही है,
वह संध्या सुंदरी परी सी,
धीरे धीरे धीरे।"

इसी प्रकार 'बादल राग' की रचना छः खण्डों में पूर्ण हुई है। इसमें कवि ने बादल को क्रांति और मानवता का वाहक मानते हुए इसके माध्यम से चेतना के प्रसार का आगाज किया है। इसमें निराला ने देश प्रेम और मानवीय पक्ष को प्रमुखता से अभिव्यक्त किया है–

"जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर।।"

मेरे मतानुसार विषय की दृष्टि से 'गीतिका' के गीत– प्रार्थना प्रधान, प्रकृति चित्रण, राष्ट्रीय , दार्शनिक और नारी सौंदर्य संबंधी हैं। 'गीतिका' का प्रथम गीत सर्व परिचित है –

"वरदे वीणावादिनि वर दे!
प्रिय स्वतंत्र–रव, अमृत–मंत्र नव
भारत में भर दे।"

निराला कृत 'राम की शक्ति पूजा' काव्य–प्रतिभा का अप्रतिम दृष्टांत है। यह कथ्य और शिल्प में अद्वितीय है। मुक्त छंद के प्रवर्तक निराला ने 'राम की शक्ति पूजा' में सबसे जटिल छंद तथा तुक विधान का पालन किया है। तत्सम बहुला सामासिक पदावली के द्वारा इतनी विराट प्रतीक व बिंब योजना का आश्रय लेकर निराला हिंदी साहित्य संसार को चमत्कृ त कर देते हैं। इसका प्रारंभ इतना नाटकीय है, जैसे रंगमंच का परदा उठ रहा हो–

"रवि हुआ अस्त य ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया राम–रावण का अपराजेय समर"

इस अपराजेय समर का समापन राम के द्वारा शक्ति की मौलिक कल्पना कर विजय के अभिनंदन से होता है।
इसी प्रकार निराला कृत 'कुकुरमुत्ता' 'अजीमा' 'नये पत्ते' की कविताओं में जो व्यंग्य दिखाई देता है उनके भीतर निराला के सामाजिक यथार्थ का गहरा बोध छिपा हुआ है –

"अब, सुन बे, गुलाब,
भूल मत जो पायी खुशबु, रंग–ओ–आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल कर इतरा रहा है केपीटलिस्ट।'

'कुकुरमुत्ता' के समान 'भिक्षुक' कविता की प्रगतिशील चेतना को स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है –

वह आता –
दो टूक कलेजे के करता, पछताता
पथ पर आता ।
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को – भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली का फैलाता –
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।'

निष्कर्ष

अस्तु, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का काव्य प्रकृति, प्रेम, समाज और प्रगतिशीलता का जीवंत दस्तावेज है । 'वह तोड़ती पत्थर' का नजरिया मात्र निराला की व्यष्टि का हिस्सा–मात्र नहीं रह जाता अपितु समस्त समाज की समष्टि का अंग बनकर सम्मुख प्रकट होता है। वास्तव में यह सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्य की जीवंतता का प्रमाण भी है ।

संदर्भ

1. निराला की साहित्य साधना (भाग–1) रूरू रामविलास शर्मा, प्रथम संस्करणः 1969 रू राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली रू पृष्ठ–14
2. निराला की साहित्य साधना (भाग–1)ः रामविलास शर्मा, प्रथम संस्करण रू 1969 रू राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ –401
3. सन्ध्या सुंदरीः निराला रचनावली (भाग–1), पृष्ठ–65
4. बादल रागः निराला रचनावली (भाग–1), पृष्ठ–124
5. गीतिकाः निराला रचनावली (भाग–1), पृष्ठ–210
6. राम की शक्ति पूजाः निराला रचनावली (भाग–1), पृष्ठ–310